

झांसी के किले में सीनियर गर्ल की चुदाई

“इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान एक सीनियर लड़की से मुलाकात हुई, दोस्ती हुई और एक दिन झांसी के किले में घूमने गए तो वहां एकांत जगह पर उसे चोदा. बाद में उसने अपनी सहेली को मज़ा दिलाया. ...”

Story By: [हर्मेन्द्र चोपड़ा \(harmendrachopda\)](#)

Posted: Saturday, March 12th, 2016

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [झांसी के किले में सीनियर गर्ल की चुदाई](#)

झांसी के किले में सीनियर गर्ल की चुदाई

मैं अब झांसी में ही एक सरकारी विभाग में असिस्टेंट मैनेजर की जॉब करता हूँ और अब अपने खुद के मकान में अकेला ही रहता हूँ।

मैं एक 5 फ़ीट 9 इन्च लम्बा गोरा आकर्षक.. 6 इन्च लम्बे लण्ड वाला.. और रेगुलर जिम करने वाला व्यक्ति हूँ। मेरा लण्ड काफ़ी मोटा है और उसका सुपारा लड़कियों को बहुत पसन्द आता है।

यह मेरी पहली कहानी है.. कहानी सन 2005 की है जब मैंने झांसी के एक इन्जीनियरिंग कालेज में कंप्यूटर इन्जीनियरिंग में दाखिला लिया। उस समय मेरे पास लैपटॉप था.. जो 2005 में बहुत कम लोगों के पास होता था। जिसकी वजह से मैं अपने दोस्तों और सीनियर्स में फ़ेमस हो गया था।

हम सारे दोस्त पढ़ाई के साथ-साथ मेरे लैपटॉप पर ही मूवी और ब्लूफिल्म देखा करते थे। हम सभी किसी न किसी लड़की को गर्लफ़्रेंड बनाने के बारे में चर्चा करते रहते थे.. लेकिन सत्य यह था कि उस साल दीवाली तक मेरा कोई चक्कर न चला।

जब मैं दीवाली की छुट्टियों में अपने घर जा रहा था.. तो बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस में मेरी पास वाली सीट पर एक मस्त लड़की बैठी थी.. जिसकी लम्बाई कम थी पर चेहरा.. गाण्ड और चूचियों के उभार बड़े मस्त थे।

वो 4 फ़ीट 11 इन्च लम्बी मेरी सीनियर सरिता (बदला हुआ नाम) थी। मैंने उसे 'गुड-इवनिंग मैम' कहा।

उसने अपने सर को जुम्बिश देते हुए मुझसे मुस्कुरा कर कहा- तुम भी घर जा रहे हो? मैंने कहा- यस..

हम दोनों बातें करने लगे, बातों-बातों में पता चला कि उसका घर मेरे घर से लगभग 10 किलोमीटर दूर है।

फिर मैंने कहा- आप मुझे अपने पुराने नोट्स दे देना.. परीक्षा के समय मेरे काम आ जायेंगे। उसने मुझे अपना नम्बर दिया और कहा- जब जरूरत हो तो फोन करके बता देना और नोट्स ले जाना।

जब मैं घर पहुँचा तो दीवाली पर उसे फोन किया और विश किया।

फिर जब हम कॉलेज लौटे तो कुछ दिनों के लिए उन्होंने मेरा लैपटॉप माँगा और मैंने भी दे दिया।

अब हमारी रोज फोन पर बात होती थीं।

दो दिन बाद उसने मेरा लैपटॉप लौटाया और कहा- फ़िल्में बहुत देखते हो तुम ?

मैंने पूछा- आपको कौन सी पसन्द आई ?

तो वो मुसकुरा दी और चली गई.. मैं समझ गया कि उसने ब्लूफ़िल्म भी देख ली हैं.. जो मेरे लैपटॉप में थीं।

वो मेरी सीनियर थी.. फिर भी मैंने मौका देख कर उसे फ़ोन पर ही 'आई लव यू' बोला.. वो थोड़ी नाराज हुई और उसने कहा- मिस्टर मेरा पहले से ब्वाँयफ़्रेंड है।

लेकिन फिर भी हमारी रोज बातें होती थीं.. धीरे-धीरे सेक्सी बातें भी होने लगीं।

उसने बताया- मैंने झूठ कहा था कि ब्वाँयफ़्रेंड है।

फिर हम दोनों ने कहीं अकेले मिलने का प्लान बनाया और पहुँच गए झांसी का किला.. सर्दियों का मौसम था.. इतने बड़े किले में हमें कोई नहीं दिख रहा था.. कोहरा भी बहुत था और हम हाथ में हाथ लिए घूम रहे थे। फिर एक सुरक्षित कोना देखा और वहीं बैठ गए।

मैंने उसे गले लगा लिया.. अब हमारी धड़कने बढ़ने लगी थीं।

धीरे से मैंने उसे किस किया.. वो भी मेरा साथ दे रही थी और मैं उसकी जैकेट में हाथ डाल कर उसकी मस्त-मस्त चूचियों को दबा रहा था।

मैंने उसका हाथ पकड़ कर अपने लन्ड पर रखा तो वो शर्मा गई.. पर वो उसे ऊपर से ही सहलाने लगी। मैं अब उसकी चूत को उसके जीन्स के ऊपर से ही दबा रहा था।

मैंने उसकी पैन्ट का बटन खोलने की कोशिश की.. तो उसने कहा- कोई देख लेगा..

फिर हम दोनों वहाँ से खड़े हुए और मैं उसे किले में बिल्कुल अन्दर बने कमरे की तरफ ले गया।

बहुत देर बाद मुझे किले में नीचे की तरफ एक अन्धेरा और बहुत बड़ा कमरा दिखा.. उस कमरे के आखिरी कोने में हम दोनों बैठ गए।

अअन्धेरे और कोहरे की वजह से वहाँ हमें कोई नहीं देख सकता था।

हम दोनों ने इससे पहले कभी किसी के साथ सेक्स नहीं किया था.. पर ब्लू-फ़िल्म बहुत देखी थीं।

मैंने उसे कस कर पकड़ लिया और उसके होंठ चूसने लगा.. वो भी मेरा लन्ड सहला रही थी।

मैंने उसकी जीन्स का बटन खोला और उसकी चूत में उंगली डाल कर सहलाने लगा।

सरिता अब जोर-जोर से सिसकारियाँ ले रही थी और उसने भी मेरा लन्ड बाहर निकाल लिया था।

मेरा लवड़ा देख कर उसने कहा- अरे ये तो बहुत मोटा है.. ठन्ड भी बहुत है यहाँ.. हम सेक्स कैसे करेंगे। अब तो कन्ट्रोल भी नहीं हो रहा..

मैंने कहा- एक उपाय है..

तो वो बोली- जल्दी करो ना..

फिर मैंने उसे झुकाया और उसका पैन्ट और पैन्टी थोड़ी नीचे की और पीछे से अपना लन्ड उसकी चूत पर रख कर रगड़ने लगा ।

उसकी चूत भी गीली हो चुकी थी.. उसकी गर्मी से मेरा लन्ड और सख्त होता जा रहा था ।

मैंने उसकी पतली सी कमर पकड़ी और अपना मोटा लन्ड उसकी चूत पर रख कर दबाया.. उसकी 'आहूहूह..' निकल गई.. पर लन्ड की सिर्फ टोपी ही अन्दर गई ।

वो जोर-जोर से सिसकारियाँ ले रही थी । फिर हमने धीरे-धीरे कोशिश की.. अब लन्ड पूरा अन्दर जा चुका था और उसे भी मजा आ रहा था ।

मुझे ऐसे लग रहा था कि जैसे मैं एक छोटी सी गुड़िया को चोद रहा हूँ । मैं लगतार 15 मिनट तक उसकी चूत में लन्ड के झटके मारता रहा ।

तभी वो अकड़ी और सिसका पड़ी- उई.. माँ.. मैं गई..

उसी के साथ मैं भी झड़ गया ।

हमने वहाँ खड़े-खड़े तीन बार और सेक्स किया.. उसे बहुत मजा आया ।

फिर कुछ दिन बाद मैंने हॉस्टल छोड़ कर बाहर एक रूम ले लिया.. जिसका गेट मकान मालिक से अलग था और घर से मोटरसाईकल ले आया । अब जब भी मौका मिलता.. वो मेरे रूम पर आ जाती और हम खूब मजे करते । कई बार वो रात को भी मेरे रूम पर रुक जाती ।

एक दिन उसने बताया- मैं अपन दोनों की सेक्सी बातें अपनी एक सहेली को बताती हूँ..

और मेरी सहेली भी एक बार सेक्स करना चाहती है.. क्या तुम एक बार उसके साथ सेक्स

कर सकते हो।

मैंने पूछा- उसका कोई बॉयफ्रेंड नहीं है क्या ?

वो बोली- नहीं.. पर वो मुझसे भी ज्यादा सुन्दर है.. एक साल पहले उसके एक पैर की हड्डी टूट गई थी.. इसलिए वो अब भी एक स्टिक के सहारे चलती है.. इसलिए कोई बॉयफ्रेंड नहीं है.. और वो अपनी खुजली के वजह से परेशान भी रहती है.. लेकिन दो-तीन महीनों में सही से चलने लगेगी।

मैंने कहा- ठीक है होली की छुट्टियों में मेरे मकान मलिक पूरे परिवार के साथ अपने गाँव जा रहे हैं। मैं यही रहूँगा.. और तुम भी अपनी सहेली के साथ आ जाना। तीन-चार दिन खूब मजे करेंगे।

सब होली की छुट्टियों में जा चुके थे। उस दिन शाम सात बजे सरिता अपनी सहेली रीना के साथ मेरे रूम पर आ गई।

क्या मस्त लड़की थी रीना.. लगभग 5 फीट 5 इन्च लम्बी.. दूध सी गोरी.. उसका 34-26-36 का मस्त साइज़.. उसे देख कर ही मेरा लन्ड खड़ा हो गया।

वो मुझे देख कर मुस्कुरा रही थी।

मैंने उन्हें अन्दर बुलाया और सरिता को पकड़ कर किस करने लगा।

सरिता ने कहा- आज तुम सिर्फ रीना के साथ सेक्स करोगे.. मेरे पीरियड कल खतम हो जायेंगे.. फिर कल रात से हम तीनों सेक्स करेंगे।

फिर मैंने झटके से रीना को पकड़ा और किस करने लगा।

मैं धीरे-धीरे उसकी चूचियों को दबा रहा था और फिर उसके कपड़ों के साथ ब्रा और पैन्टी को उतारकर उसकी चूचियों को चूसते हुए उसके हाथ में अपना लन्ड पकड़ा दिया।

वो बोली- उफ़फ़.. ये तो काफ़ी मोटा है।

तो सरिता ने कहा- चिन्ता ना कर.. आराम से चला जाएगा और तेरी चूत को मज़ा भी बहुत देगा.. चल अब चूस तो उसे..

अब रीना मेरा लन्ड चूस रही थी और मैं उसकी चूत.. अब उसके मुँह से जोर-जोर से सिसकारियाँ निकलने लगी थीं।

मैंने उसे नीचे लिटाया और उसकी चूत पर अपना लन्ड रख के धीरे-धीरे दबाने लगा। वो 'उह्ह.. आह्ह..' कर रही थी। जब आधा लन्ड अन्दर चला गया.. तो मैं धीरे-धीरे अन्दर-बाहर करने लगा।

फ़िर एक झटके में पूरा अन्दर डाल दिया.. तो वो चीख पड़ी।

मैंने अपने होंठ उसके होंठों पर रखे और उसे चोदने लगा। अब उसके मुँह से मस्त 'उस्स.. आह्ह..' की आवाज़ आ रही थी।

कुछ देर में वो झड़ गई लेकिन मैं चोदता रहा और उसकी चूत में ही झड़ गया।

फ़िर उसने मेरा लन्ड चाट कर साफ़ किया।

रीना के साथ सरिता से भी ज्यादा मज़ा आया।

इधर सरिता भी गरम हो चुकी थी लेकिन वो आज सेक्स नहीं कर सकती थी। वो मेरा लन्ड पकड़ कर चूसने लगी और मैं रीना को किस कर रहा था। साथ ही उसकी चूत और गाण्ड भी सहला रहा था।

फ़िर मैंने रीना की गाण्ड पर सरसों का तेल लगाया.. तो वो बोली- नहीं वहाँ मत डालो.. दर्द होगा।

लेकिन सरिता के कहने पर वो मान गई।

फ़िर मैंने धीरे-धीरे अपना लन्ड उसकी टाइट गाण्ड में डाला.. उसे दर्द हुआ.. पर कुछ देर बाद उसे भी मज़ा आने लगा ।

मैं उसकी गाण्ड को चोद रहा था और सरिता उसकी चूचियों को चूस रही थी और उसकी चूत सहला रही थी । बीच-बीच में रीना भी सरिता की चूचियों को चूस रही थी ।

रीना के एक तरफ़ मैं लेटा था और दूसरी तरफ़ सरिता ।
मैं उसकी गाण्ड में ही झड़ गया ।

फ़िर हम साथ साथ नहाए.. खाना खाया और रात भर मस्ती की ।

रीना बहुत खुश थी.. उसने मुझे अगले दिन एक जीन्स टी-शर्ट गिफ़्ट की और सरिता अनार का जूस भी लेके आई थी ।

उस रात और अगले दो दिन मैंने सरिता और रीना दोनों को खूब चोदा ।
उन दोनों ने भी खूब मज़े किए.. जूस पिया.. चिकन खाया और होली के दिन तीनों ने खूब बियर पी और जमके सेक्स किया ।

रीना झाँसी की ही रहने वाली है और वो एक अमीर बाप की अकेली लड़की है, वो अभी भी जब समय मिलता तो मेरे पास आती है, मेरे लिए बहुत सारे गिफ़्ट लाया करती है और हम दोनों खूब मज़े करते हैं ।

सरिता अब बैंगलोर में जॉब करती है और दोनों की ही शादी हो चुकी है ।

आगे की कहानी में बताऊँगा कि कैसे सरिता की चार सहेलियाँ मुझसे बारी बारी चुदवाती थीं और बदले में मुझे गिफ़्ट और खर्चा पानी के लिए रुपए देती थीं ।

आप लोग बताइएगा कहानी कैसी लगी.. खासकर झाँसी की लड़कियों के ईमेल्स का

इन्तजार रहेगा ।

harmendra87@gmail.com है ।

